आभासी प्रदर्शनी

(फेसबुक लाइव)

'दी लिगेसी ऑफ डॉ० वी० एस० वाकणकर'

(४ मई, २०२०)

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

नई दिल्ली

'दी लिगेसी ऑफ डॉ० वी० एस० वाकणकर'

गत वर्ष (2019–20) प्राच्या भारतीय संस्कृति व सभ्यता के संवाहक के रूप में विश्वपटल पर दृष्टित, भारतीय शैलचित्र के 'पितामह' भीमबेटका पुरास्थल व प्राचीन भारतीय सभ्यता का केंद्र बिंदु वैदिक नदी सरस्वती के प्राचीन प्रवाहपथ के खोजकर्ता, पुराविद्, कलासाधक, भारतीय संस्कृति व सभ्यता के 'युगदृष्टा', पद्मश्री विष्णु श्रीधर वाकणकर का शताब्दी वर्षोत्सव के अवसर पर इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के आदि दृश्य विभाग द्वारा 'दी लिगेसी ऑफ डॉ० वी० एस० वाकणकर' विषय पर फेसबुक तथा यूट्यूब के माध्यम से आभासी प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 4 मई, 2020 को किया गया।

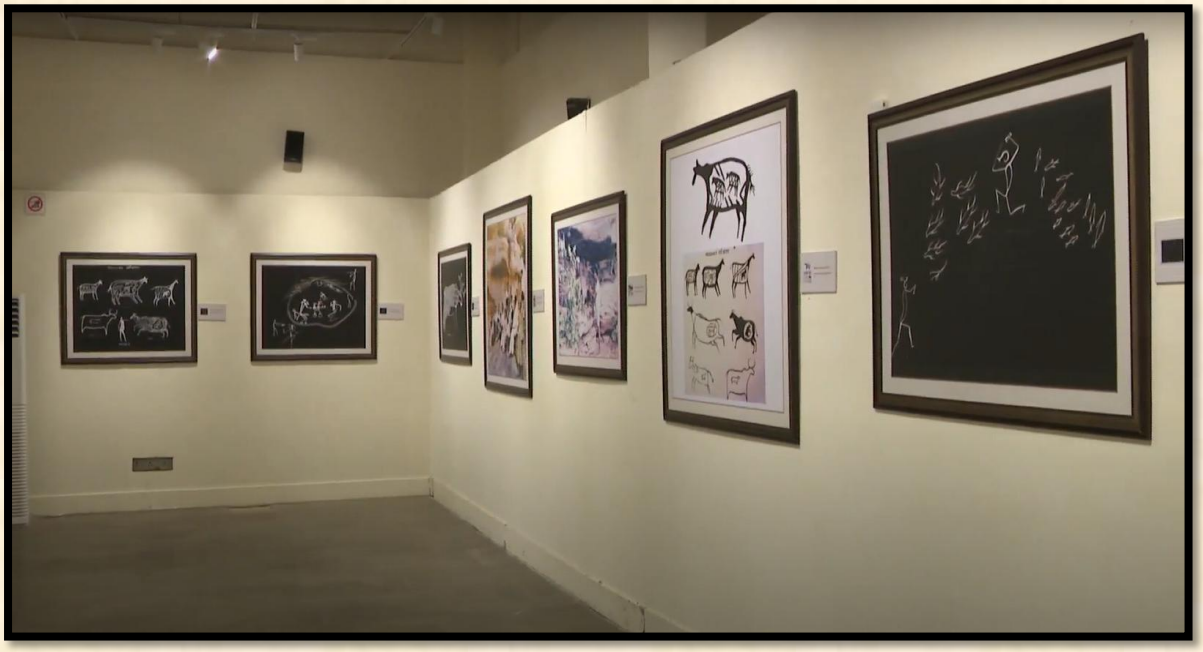

आभासी प्रदर्शनी 'दी लिगेसी ऑफ डॉ० वी० एस० वाकणकर'

प्रदर्शनी के प्रारम्भ में आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बी0 एल0 मल्ला ने डॉ0 वाकणकर के प्रारम्भिक जीवन, शैक्षणिक जीवन के साथ प्रदर्शनी में वाकणकर जी के जीवन के विविध पहलुओं से सम्बंधित प्रदर्शित दृश्यों; यथा पारिवारिक जीवन, राजनैतिक जीवन, स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक, साहित्यकार, इतिहासकार, चित्रकार, भारतीय शैलचित्र कला के 'पितामह', भीमबेटका की खोज, प्रमुख सर्वेक्षण व उत्खनन, पुरातत्त्ववेत्ता, मुद्राशास्त्री, सरस्वती शोध अभियान तथा महानिर्वाण, के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान किए, जिनपर विस्तृत रूप से छायाचित्र प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुति किया गया।

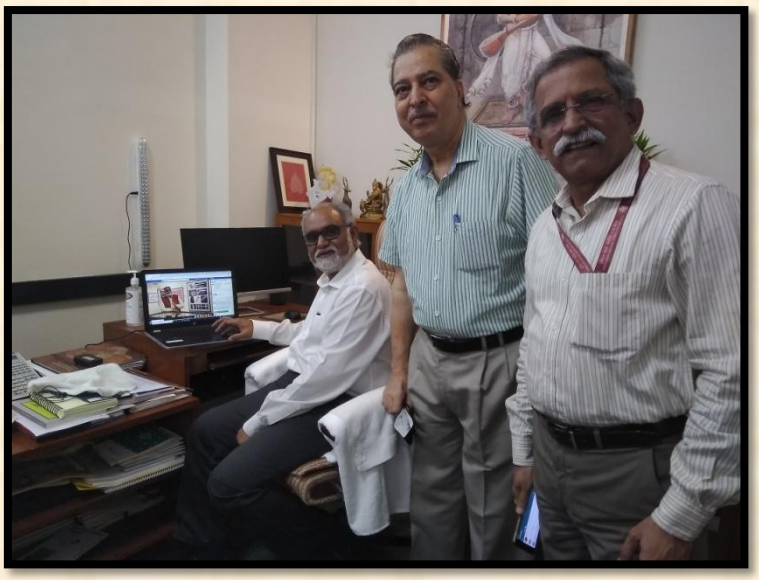

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी,
प्रो0 बी0 एल0 मल्ला व श्री आर0 ए0 रांगनेकर

इं० गाँ० रा० क० के० के माननीय सदस्य सचिव डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी ने प्रागैतिहासिक शैलचित्र कला के आधार पर भारतीय संस्कृति की प्राचीनता पर प्रकाश डाला। साथ ही, प्राचीन भारतीय संस्कृति के इन वैश्विक धरोहरों को पुराविदों के दृष्टि में लाने एवं जन–मानस के मध्य जागरूक करने के लिए पद्मश्री डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर 'हरिभाऊ' के अप्रितम योगदान के विषय में सभी को अवगत किया। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में आदि दृश्य विभाग (शैल कला विभाग) द्वारा विषय सम्बन्धी संपन्न किये गए विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में भी माननीय सदस्य सचिव जी ने संक्षिप्त परिचय दिए तथा भविष्य में संस्था में डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर के नाम पर शैल कला पर स्थायी दीर्घा के स्थापना की बात कही।

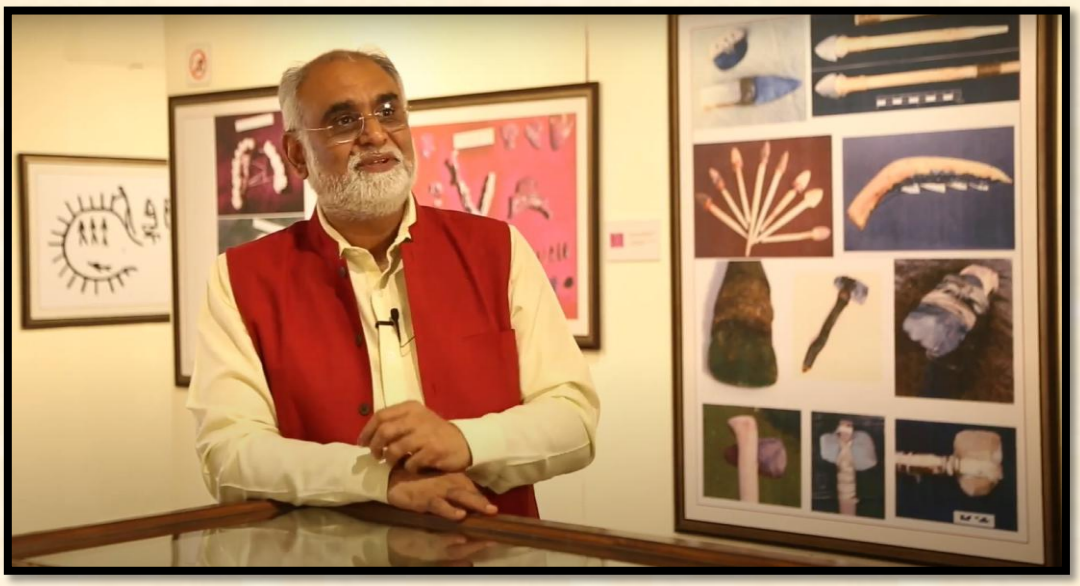

डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी प्रदर्शनी व डॉ0 वाकणकर के विषय में जानकारी देते हुए

प्रदर्शनी के समापन में प्रो0 बी0 एल0 मल्ला जी ने आदि दृश्य विभाग द्वारा डॉ0 वाकणकर जी के शताब्दी वर्षोत्सव (2019–20) पर संपन्न किये गए कार्यक्रमों; वाकणकर स्मृति व्याख्यान (3 अप्रैल, 2019), राष्ट्रीय संगोष्ठी (2–4 मई, 2019), 'पद्मश्री विष्णु श्रीधर वाकणकर की धरोहर' विषय पर संस्था में अस्थायी प्रदर्शनी (2–30 मई, 2020) व लखनऊ विश्वविद्यालय में चलायमान प्रदर्शनी (21–30 सितम्बर, 2019) तथा भीमबेटका पुरास्थल (रायसेन, मध्य प्रदेश) पर चित्रकार कार्यशाला, के विषय में जानकारी प्रदान किए।

उपरोक्त प्रदर्शिनी के माध्यम से अधिकतम विद्वतजनों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों आदि को जोड़ने के उद्देश्य से विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों, शैक्षणिक संस्थानों तथा संस्कृति मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय आदि से सम्बंधित अनेक संस्थाओं को ई@मेल, वाट्सअप, ट्विटर, फोन आदि के माध्यम से अवगत किया गया फलतः लगभग 150 से अधिक लोग फेसबुक लाइव जुड़े तथा बाद में IGNCA फेसबुक पेज पर लगभग 1600 एवं यू–ट्यूब पर अपलोड होने पर लगभग 300 लोगों ने देखा व सकारात्मक प्रतिक्रियाऐं दी। प्रदर्शिनी से सम्बंधित रिपोर्ट, विहंगम रिपोर्ट को IGNCA की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। प्रदर्शिनी को यू–ट्यूब पर भी अपलोड किया गया है।

यू–ट्यूब लिंक– https://www.youtube.com/watch?v=QKUeZOz4eTE

IGNCA फेसबुक पेज

https://www.facebook.com/293302312515/videos/173476803906945/?__so__=channel_tab&__rv__=all_videos_card

आभार

उपरोक्त आभासी प्रदर्शनी का आयोजन इं० गाँ० रा० क० के० के माननीय सदस्य सचिव प्रो० सच्चिदानंद जोशी जी के प्रेरणास्वरूप तथा आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 बंशी लाल मल्ला जी के सफल मार्गदर्शन व आदि दृश्य विभाग के परियोजना सहायक, श्री प्रवीण कुमार सी0 के0, श्रीमती रीता रावत, सुश्री सुपर्णा डे एवं श्री प्रमोद कुमार आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास के परिणामस्वरूप संभव हो सका। अंततः संचार केन्द्र (इं० गाँ० रा० क० के०) का कोटिशः धन्यवाद जिनके सहयोग से प्रदर्शनी को डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रदर्शन करने हेतु स्वरूप प्रदान किया जा सका।

डॉ० दिलीप कुमार सन्त
अनुसंधान अधिकारी
आदि दृश्य विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली